डॉ॰ओम प्रकाश आर्य
महाराणा कॉलेज आरा

बी॰ ए॰ स्नातक सेमेस्टर – I

MJC – I

व्यञ्जन सन्धि

जब किसी व्यञ्जन वर्ण के बाद कोई स्वर तथा व्यञ्जन हो और उनके योग से कुछ विकार उत्पन्न हो तो उसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं।

व्यञ्जन सन्धि के प्रमुख भेद

1. श्चुत्व सन्धि
2. ष्टुत्व सन्धि
3. जश्त्व सन्धि
4. चर्त्व सन्धि
5. अनुस्वार सन्धि
6. अनुनासिक सन्धि

1. श्चुत्व सन्धि – स्तोः श्चुना श्चुः।
यदि सकार तथा तवर्ग के बाद शकार तथा चवर्ग (च, छ, ज, झ, ञ) हो तो सकार के स्थान पर शकार तथा तवर्ग के स्थान पर यथाक्रम चवर्ग हो जाता है।

यथा – हरिस् + शेते = हरिश्शेते (स् + श् = श)
सत् + चित्ः = सच्चितः (त् + च = च)
तद् + जय = तज्जय
शत्रुन् + जयति = शत्रुञ्जयति
शरद् + चन्द्रः = शरच्चन्द्रः
सत् + चिदानन्दः = सच्चिदानन्दः

2. ष्टुत्व सन्धि – ष्टुना ष्टुः।
जब स् तथा तवर्ग के बाद ष् तथा टवर्ग हो तो स् के स्थान पर ष् तथा तवर्ग के स्थान पर यथाक्रम टवर्ग हो जाता है।

यथा - रामस् + षष्ठः = रामष्षष्ठः (स् + ष् = ष)
तत् + टीका = तट्टीका (त् + ट = ट)
उद् + डयनम् = उड्डयनम् (द् + ड = ड)
रामस् + टीकते = रामष्टीकते

3. जश्त्व सन्धि - झलां जशोऽन्ते ।
जब झल् प्रत्याहार के बाद स्वर या व्यञ्जन आये तो 'झल्' के स्थान पर 'जश्' प्रत्याहार अर्थात् वर्गों का तीसरा वर्ण हो जाता है।
इस सन्धि के दो भेद हैं -
1. पदान्त जश्त्व 2. अपदान्त जश्त्व
1. पदान्त जश्त्व - जब वर्ग के प्रथम चार वर्णों के बाद कोई स्वर, वर्गों के तृतीय, चतुर्थ वर्ण, या य, र, ल, व में से कोई आए तो पूर्व के वर्णों के स्थान पर उसी वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है।
यथा - वाक् + दानम् = वाग्दानम्
जगत् + ईशः = जगदीशः
सत् + गतिः = सद्गतिः
दिक् + गजः = दिग्गजः
जगत् + आधारः = जगदाधारः
2. अपदान्त जश्त्व - 'झल्' प्रत्याहार के बाद 'झश्' प्रत्याहार का कोई वर्ण हो तो 'झल्' के स्थान पर 'जश्' प्रत्याहार अर्थात् वर्गों का तृतीय वर्ण हो जाता है।
यथा - शुध् + धिः = शुद्धिः (ध् + ध = द्)
आरभ् + धः = आरब्धः
दुध् + धः = दुग्धः
बुध् + धिः = बुद्धिः

classmate
Date
Page

4. चर्त्व सन्धि- खरि च ।
यदि 'खर्' प्रत्याहार अर्थात् वर्गों के प्रथम दो वर्ण तथा श, ष, स वर्णों के पहले 'झल्' प्रत्याहार का कोई वर्ण हो तो पहले वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का प्रथम वर्ण हो जाता है।
यथा- लभ्+स्यते = लप्स्यते (भ्+स्=प्)
तद्+परः = तत्परः
षड् पुरुषाः = षट्पुरुषाः, उत्पन्नः।

5. अनुनासिक सन्धि- यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा
यदि 'यर्' प्रत्याहार के बाद कोई अनुनासिकवर्ण अर्थात् ङ्, ञ्, ण्, न्, म् आए तो पूर्व पद के अन्तिम वर्ण के स्थान पर उसीवर्ग का पाँचवां या तीसरा वर्ण हो जाता है।
यथा- दिक्+नाथः = दिग्नाथः, दिङ्नाथः
एतत्+मुरारिः = एतद्मुरारिः, एतन्मुरारिः
जगत्+नाथः = जगद्नाथः, जगन्नाथः
वाक्+मयम्+वाग्मयम्, वाङ्मयम्

6. अनुस्वार सन्धि- मोऽनुस्वारः।
यदि पद के अन्त में 'म्' आए तथा उसके बाद कोई व्यञ्जन वर्ण आए तो 'म्' के स्थान पर अनुस्वार ं हो जाता है।
यथा- हरिम्+वन्दे = हरिं वन्दे
स्वर्गम्+गतः = स्वर्गं गतः
नगरम्+गतः = नगरं गतः
त्वम्+चलसि = त्वं चलसि
म्+व्यञ्जन = (ं)